B.Ed. I^st year

Subject :- Teaching of Social Science

Imp. Topic :- शिक्षण विधि एवं व्यूह रचनाओ (आव्यूह) मे अन्तर :-

प्राय: शिक्षण विधि या पद्धति तथा शिक्षण आव्यूह या नीतियो को एक ही माना जाता है। परन्तु दोनो मे महत्वपूर्ण अन्तर है। जो निम्नलिखित है —

क्र० सं०	शिक्षण - विधि	शिक्षण आव्यूह
1.	शिक्षण विधि मे पाठ्यवस्तु तथा प्रस्तुतीकरण का ढ़ग उसका प्रमुख पक्ष होता है। इसमे विषय वस्तु को विशेष ढ़ंग से प्रस्तुत किया जाता है जिससे उसे उचित ढ़ंग से ग्रहण करने एवं भली-भाँति समझने मे सहायता मिलती है।	शिक्षण व्यूह रचना से इस प्रकार के शिक्षण - अधिगम वातावरण के निर्माण मे सहायता मिलती है, जिससे निर्धारित शिक्षण अधिगम उद्देश्यो की प्राप्ति मे उचित सहायता मिल सके।
2.	शिक्षण विधि मे सम्पूर्ण उपागम का अनुसरण किया जाता है।	शिक्षण आव्यूह या नीति मे सूक्ष्म उपागम का प्रयोग किया जाता है।
3.	शिक्षण विधियो के मूल्यांकन का मानदण्ड पाठ्यवस्तु का स्वाभित्व माना जाता है।	शिक्षण नीतियो का मानदण्ड उद्देश्यो की प्राप्ति मानते है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

क्र.सं.	शिक्षण विधि	शिक्षण आव्यूह
4.	शिक्षण विधियों के परम्परागत मानव व्यवस्था सिद्धान्त पर आधारित मानते है।	शिक्षण आव्यूह को आधुनिक मानव व्यवस्था सिद्धान्त पर आधारित माना जाता है।
5	शिक्षण विधियों की अवधारणा है कि शिक्षण एक कला है।	शिक्षण आव्यूह रचना कि अवधारणा है कि शिक्षण एक विज्ञान है।
6	शिक्षण विधि के प्रारूपों मे आसानी से परिवर्तन सम्भव नही होता है।	शिक्षण व्यूह रचना उपयोग की दृष्टि से काफी लचीली होती है।
7.	शिक्षण विधि का सम्बन्ध शिक्षण विज्ञान से है, जो कि काफी समय से चला आ रहा है।	शिक्षण व्यूह रचना का सम्बन्ध सैन्य विज्ञान और शैक्षिक तकनीकि से है, जो कि शिक्षण विधि की अपेक्षाकृत नया है।
8	शिक्षण विधियों का मुख्य तथ्य प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण करना है।	शिक्षण आव्यूह का मुख्य तथ्य सम्पूर्ण अधिगम परिस्थितियों को पैदा करना है।
9	शिक्षण विधि का चयन उसकी विषय-वस्तु पर निर्भर करता है।	शिक्षण आव्यूह रचना, शिक्षण अधिगम उद्देश्यों की प्रकृति पर निर्भर करती है।
	शिक्षण विधि मे प्रविधियों की सहायता ली जाती है।	शिक्षण नीति मे शिक्षण युक्तियो की सहायता ली जाती है।
	किसी भी शिक्षण विधि की प्रभावशीलता का अनुमान करने के लिए उपलब्धि परीक्षणो का प्रयोग किया जाता है।	कोई शिक्षण व्यूह रचना कितनी प्रभावशाली है इसका पता लगाने हेतु मानदण्ड सन्दर्भित परीक्षणो का प्रयोग किया जाता है।

Thankyou

by
Mr. Parveen Raj
Assis. Prof.
B.R.C.D (SRE)

Scanned with CamScanner